# परी

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

कुसुमी बोली, "तुम बहुत ज्यादा बनावटी कहानी सुनाते हो। कोई सच्ची कहानी सुनाओ न!"

मैंने कहा, "इस दुनिया में दो तरह की चीजें हैं। एक है सच, और दूसरा है – और भी ज्यादा सच। मेरा कारोबार इस ज्यादा सच को लेकर है।"

"दद्दू, सब कहते हैं, तुम्हारी बातें समझ में नहीं आतीं।"

मैंने कहा, "बात ठीक है। पर जो नहीं समझ पाते हैं, गलती उन्हीं की है।"
"ज्यादा सच का मतलब क्या है, जरा मुझे भी समझाओ।"
मैंने कहा, "समझ लो कि लोग जो तुम्हें कुसुमी कहते हैं, यह बिल्कुल सच है, इसके ढेर सारे प्रमाण मिल जाएँगे। मगर मुझे पता चला है कि तुम परियों के देश की परी हो, यह ज्यादा सत्य है।"
कुसुमी खुश हो गयी। बोली, "तुम्हें पता कैसे चला?"

मैंने बताया, "उस दिन परीक्षा के समय जब तुम बिस्तर पर बैठी-बैठी भूगोल याद कर रही थी-तब अचानक तुम्हारा सिर तकिये पर झुक गया और तुम सो गयी थी। उसी दिन पूर्णिमा की रात थी। खिड़की से चाँदनी की किरणें तुम्हारे चेहरे और आसमानी साड़ी पर पड़ रही थीं। मैंने उस दिन साफ-साफ देखा था परियों के राजा ने अपनी भागी हुई परी का हाल जानने के लिए गुप्तचर भेजा था। वह हमारी खिड़की के पास खड़ा था। उसका सफेद चादर उड़कर कमरे में आ गया था। गुप्तचर तुम्हें गौर से देखता रहा। उसकी समझ में नहीं आया कि तुम वही भागी हुई परी हो कि नहीं। उसे सन्देह हुआ कि कहीं तुम इस धरती की परी तो नहीं हो। ऐसे में यहाँ से उठाकर ले जाना उसके लिए आसान नहीं था। वह इतना भार उठा नहीं सकता था। धीरे-धीरे चाँद और ऊपर चला गया, कमरे में अंधेरा सा छा गया। गुप्तचर निराशा से सिर हिलाकर सेमल के पेड़ के नीचे चला गया। उसी दिन मुझे पता चला कि तुम परियों के देश की परी हो। इस धरती के मोहपाश में तुम बँध गयी हो।"

कुसुमी ने पूछा, "दद्दू, मैं परियों के देश से यहाँ कैसे आ गयी?"

मैंने कहा, "वहाँ एक दिन तुम पारिजात के वन में तितली की पीठ पर सवार होकर घूम रही थी, अचानक तुम्हारी नजर दिगन्त के घाट पर जा पहुँची जहाँ एक नाव पड़ी थी। वह नाव सफेद बादलों से बनी हुई थी जो हवा से डोल रही थी। तुम्हें न जाने क्या हुआ कि तुम उस नाव में जाकर बैठ गयी। नाव बहने लगी। बहती-बहती वह इस धरती के घाट पर आकर पहुँची। तुम्हारी माँ ने तुम्हें अपनी गोद में ले लिया।"
कुसुमी बहुत खुश होकर ताली बजाकर बोली, "दद्दू, क्या यह बात सच है?"
मैंने कहा, "अरे यह किसने कहा सच है, मैं तो सच को मानता नहीं। यह तो और ज्यादा सच है।"
कुसुमी ने पूछा, "क्या मैं अब परियों के देश में लौट नहीं सकती?"
मैंने कहा, "लौट भी सकती हो अगर तुम्हारे सपनों के पाल में परियों के देश की हवा का झोंका आकर लग जाए।"
"और अगर झोंका लग जाए तो मैं किस रास्ते से, किधर से होकर कहाँ जाऊँगी? वह जगह क्या बहुत-बहुत दूर है?"
मैंने कहा, "नहीं, वह बहुत करीब है।"
"कितने करीब?"

"जितने करीब तुम और हम हैं। तुम्हें अपने इस पलंग से दूर भी जाना नहीं पड़ेगा। जब किसी दिन खिड़की से चाँदनी अन्दर आएगी तब तुम बाहर की ओर देखोगी तो तुम्हें बिल्कुल मेरी बातें झूठी नहीं लगेंगी। तुम देखोगी चाँदनी के प्रवाह में बहती हुई बादलों की एक नाव आ पहुँची है। मगर अब चूँकि तुम इस धरती की परी बन गयी हो इसलिए तुम्हारे लिए वह नाव बहुत छोटी पड़ेगी। तब तुम अपने इस शरीर को यहीं छोड़कर चली जाओगी, सिर्फ तुम्हारा मन ही तुम्हारा साथी रहेगा। तुम्हारा सच इस धरती पर पड़ा रह जाएगा और तुम्हारा और भी ज्यादा सच बहता-बहता कहाँ तक चलता जाएगा, हम लोगों को भी पता नहीं चलेगा।"

कुसुमी बोली, "ठीक है, इस बार पूर्णिमा को मैं आसमान की ओर देखती रहूंगी। दद्दू, क्या तुम मेरा हाथ पकड़कर मेरे साथ चलोगे?"

मैंने कहा, "मैं यहीं बैठे-बैठे ही तुम्हें रास्ता दिखाता रहूंगा। मुझमें वह क्षमता है-क्योंकि मैं उसी और भी ज्यादा सच का कारोबारी हूँ।"